Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

U.G. IV
MJC - 05 : Western Philosophy

Leibnitz - 'Theory of monads'

लाइबनीज का 'चिदणु - सिद्धान्त'

लाइबनीज द्रव्य को चिदणु (Monad) कहते हैं। लाइबनीज के चिदणु डेकार्ट के द्रव्य की भाँति स्वतंत्र हैं परंतु ये शक्तिसम्पन्न हैं। भौतिक विज्ञान के परमाणुओं की भाँति ये चिदणु परमाणु (Atoms) हैं परन्तु ये स्वतंत्र शक्तिसम्पन्न चेतन परमाणु हैं। इनके चिदणु गणित के बिंदुओं की तथा भौतिक विज्ञान के परमाणुओं से भिन्न हैं। गणित के बिंदु निरवयव तथा अविभाज्य तो हैं परन्तु काल्पनिक हैं, वास्तविक नहीं। दूसरी ओर, भौतिक पदार्थ के परमाणु तात्विक या वास्तविक तो हैं परन्तु निरवयव एवं अविभाज्य नहीं हैं। चिदणु

में परमाणु की वास्तविकता है परंतु उसकी विभाज्यता एवं जड़ता नहीं। ये चिदणु निरवयव, अविभाज्य, तात्विक या वास्तविक एवं चेतन हैं। ये अपनी शक्ति का केंद्र स्वयं हैं। ये अनादि, अनंत एवं नित्य हैं। ये विश्व में असंख्य हैं। यहाँ लाइबनीज परमाणुवादियों से भिन्न विचार रखते हैं। परमाणुवादी वैज्ञानिक परमाणुओं को शक्तिरूप तो मानते हैं परंतु इन्हें अचेतन बताते हैं। इसके विपरीत लाइबनीज के अनुसार चिदणु अभौतिक होने के कारण चेतन हैं। ये आध्यात्मिक शक्तिस्वरूप हैं। ये विश्व के अंतिम अविभाज्य, सरलतम, शक्तिस्वरूप अवयव हैं।

प्रत्येक चिदणु संसार के अन्य सभी चिदणुओं को अपने अंदर प्रतिबिंबित करता है। यह संपूर्ण विश्व को अपने अंदर प्रतिबिंबित करता है। प्रत्येक चिदणु ब्रह्माण्ड का लघु रूप है। प्रत्येक चिदणु संपूर्ण विश्व का एक सजीव दर्पण है। चिदणु चेतन होते हैं। विश्व असंख्य चेतन चिदणुओं से भरा है। यह चेतना सभी चिदणुओं में समान रूप

से नहीं पायी जाती है। इसलिए इनका सजातीय भेद संभव है। जातिरूप में सभी चिदणु समान हैं। इनमें गुणात्मक एवं संख्यात्मक भेद दोनों पाये जाते हैं। न्यूनाधिक चेतना के कारण इनमें गुणात्मक भेद है और असंख्य या अनेक होने के कारण इनमें संख्यात्मक या परिमाणात्मक भेद भी दिखाई देता है।

लाइबनीज का कथन है कि सभी प्रकार का ज्ञान चिदणुओं में जन्मजात है। जन्मजात होने का अर्थ यह है कि सभी प्रत्यय स्पष्ट या विकसित रूप में नहीं बल्कि प्रवृत्ति के रूप में आत्मा या चिदणु के अन्दर विद्यमान हैं। ज्ञान के विकास के लिए बाह्य वस्तु से उत्पन्न अनुभव की आवश्यकता नहीं होती बल्कि यह अनुभव बुद्धि की स्वतंत्र क्रिया का परिणाम होता है इसीलिए लाइबनीज ने कहा है कि "आत्मा किसी कोरे कागज के समान नहीं है, बल्कि एक पथ्थर के टुकड़े के समान है, जिसमें मूर्ति बनने की क्षमता पहले से ही विद्यमान होती है।" अतः संवेदन और विचार में केवल मात्रा का भेद है। संवेदन अस्पष्ट विचार है जबकि ज्ञान आत्मा का अनिवार्य लक्षण है।

लाइबनीज चिदणुओं को पूर्णक (Entelechy) कहते हैं और प्रत्येक चिदणु को अन्य चिदणुओं से स्वतन्त्र मानते हैं। इसलिए लाइबनीज ने कहा है कि 'चिदणु गवाक्षहीन होते हैं।' किन्तु दूसरी ओर वे यह भी कहते हैं कि प्रत्येक चिदणु संपूर्ण विश्व को प्रतिबिम्बित करता है। इन दोनों कथनों में संबंध मानते हुए वे कहते हैं कि चिदणुओं में चैतन्य शक्ति बीजरूप में समान है। भिन्नता उनमें विकास को लेकर है। प्रत्येक चिदणु में संपूर्ण विश्व बीज रूप में है विकसित रूप में नहीं।

गुणात्मक दृष्टि से सभी चिदणु एक ही प्रकार के हैं लेकिन चेतना की अभिव्यक्ति को लेकर उनमें परिमाणात्मक भेद होता है। चिदणुओं का वर्गीकरण निम्न रूप से किया गया है।—

(1) अचेतन या नग्न चिदणु — इसमें चेतना की मात्रा न्यूनतम पायी जाती है। यह अचेतन जड़ जगत् की अवस्था है। इसे उपनिषदों में अन्नमय-कोष कहा गया है।

(2) उपचेतन चिदणु — इस श्रेणी में चिदणुओं में चेतना का स्फुरण तो होता है किन्तु उनमें संचरण शक्ति या क्रियाशीलता का अभाव पाया जाता है। इसे वनस्पति

जगत कहते हैं। उपनिषदों में इसे प्राणमय कोष कहा गया है।

(3) चेतन चिदणु – यह पशु-पक्षियों का संसार है। इसमें संचरण शक्ति के साथ-साथ क्रियाशीलता पायी जाती है। उपनिषदों में इसे मनोमय कोष कहा गया है।

(4) स्वचेतन या आत्मचेतन चिदणु – यह मानव जगत् का स्तर है। इसमें संवेदनशक्ति, संचरण शक्ति के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति भी पायी जाती है। उपनिषदों में इसे विज्ञानमय कोष कहा गया है।

(5) परम् चिदणु या रानी चिदणु – लाइबनीज ने इस सर्वोच्च चिदणु को ईश्वर कहा है। अतः इसमें सभी चिदणु जड़तत्व से लेकर मानव जगत् तक सादृश्य नियम के द्वारा नियमित और अनुशासित हैं।

लेकिन प्रश्न उठता है कि सभी चिदणुओं में चैतन्य शक्ति बीज रूप में विद्यमान है तो सभी अपनी शक्ति का ~~विकास~~ समान रूप से क्यों नहीं कर लेते? लाइबनीज का उत्तर है कि यद्यपि प्रत्येक चिदणु क्रियाशील है फिर भी ईश्वर चिदणु को छोड़कर सभी चिदणुओं में 'गति अवरोधक शक्ति'

विद्यमान होती है जिसे उन्होंने 'सूक्ष्म जड़ता' का नाम दिया है। यह सूक्ष्म जड़ता ही चेतन शक्ति के विकास को बाधित करती है। जिसमें यह सूक्ष्म जड़ता अधिक होती है उन चिदणुओं का विकास कम होता है और जिसमें सूक्ष्म जड़ता कम होती है उन चिदणुओं का विकास अधिक होता है। लेकिन ईश्वर में जड़ता बिल्कुल नहीं है इसलिए ईश्वर पूर्ण सक्रिय और पूर्ण विकासवान है। लाइबनीज के अनुसार सूक्ष्म जड़ता विशिष्ट चिदणुओं से संबंधित है और स्थूल जड़ता चिदणुओं के समूह से संबंधित है।

लाइबनीज के चिदणु सिद्धान्त को 'अदृश्यों का अभेद' (Identity of indiscernibles) कहा गया है। लाइबनीज के दर्शन में प्रत्येक चिदणु व्यक्ति विशेष है, प्रत्येक की अपनी विशेषता है। कोई भी दो चिदणु एक जैसे नहीं हैं। इसीलिए कहा जाता है कि इतिहास अपने को नहीं दुहराता। चिदणुओं की शृंखला शाश्वत है किन्तु चिदणुओं में कहीं भी रिक्तता नहीं होती और कोई भी चिदणु अभिन्न नहीं हैं। इस प्रकार चिदणु की वैयक्तिकता पर बल देने के कारण लाइबनीज का बहुत्ववाद स्पष्ट हो जाता है।